इंगलैण्ड का इतिहास

Paper-II

Q. एलिजाबेथ का शासन काल धर्म सुधार - प्रतिक्रिया आन्दोलन के विरुद्ध संघर्ष का काल था। क्यों?

Ans- एलिजाबेथ अपने पिता हेनरी आठवाँ की वसीयत के अनुसार 16 नवम्बर 1558 ई० में मेरी ट्यूडर के मरने के बाद इंगलैंड की महारानी बनी। वह एक योग्य, साहसी, दूरदर्शी और दृढ़ निश्चय वाली शासिका थी। वह अपनी प्रजा की भलाई के लिए मरती थी। उसने एक संसद में कहा था कि- "Nothing, no worldly thing under the sun is so dear to me as the love and good will of my subject."

धार्मिक विचार की नीति → एलिज़ाबेथ को न तो कैथोलिकों से प्रेम था और न प्रोटेस्टेंटों से कोई लगाव था। धर्म के नाम पर नीचता और अत्याचार करना वह अच्छा नहीं समझती थी। यदि वह कैथोलिक मत को मानती तो उसे राज्याधिकार से ही हाथ धोना पड़ जाता। इसलिए अपनी स्थिति को दृढ़ करने के विचार से वह प्रोटेस्टैंट धर्म को मानने के लिए विवश हो गई। लेकिन वह कैथोलिकों के हृदय को भी दुखाना नहीं चाहती थी। इस प्रकार रानी का स्वभाव तत्कालीन भारत सम्राट अकबर के समान था। वह हर एक धर्म के मानने वालों को खुश करने के पक्ष में थी।

एंग्लिकन चर्च की स्थापना → एलिजाबेथ ने एंग्लिकन चर्च या राष्ट्रीय चर्च की स्थापना करने के लिए निम्नलिखित कार्य किये -

(1) **सर्वोच्चता का नियम** → 1559 ई० में यह नियम पास किया गया। इस नियम के द्वारा रानी ने अपने योग्य मंत्रियों के द्वारा चर्च के प्रधान (Head of the church) के स्थान पर

P.T.O

चर्च की शासिका (Chief Governor of the Church) शब्द रख दिया। इस तरह उसने कैथोलिकों का दिल भर दिया। फिर हेनरी आठवाँ ने जो एक उपाधि 'धरती पर इंग्लैण्ड के चर्च का एक मात्र सर्वोपरि अध्यक्ष" की लगाई थी, रानी ने उसके बदले "धार्मिक और लौकिक मामलों में इस राज्य की एकमात्र सर्वोपरि शासिका' की उपाधि अपने पीछे लगाई। इससे जनता के विचारों के विरोध का अंत हो गया।

(2) एकरूपता का नियम → मेरी ने इस नियम को भंग कर दिया था जिसे रानी पुनः लागू कर दिया। एडवर्ड छठा के समय की दूसरी प्रार्थना पुस्तक में कुछ शब्द कैथोलिकों को पसन्द नहीं थे। रानी ने उन्हें निकालकर फिर से एक प्रार्थना पुस्तक बना दी। हर एक पादरी को उसके ही अनुसार प्रार्थना करने की आज्ञा दी गई। नहीं मानने वालों को जुर्माना और सजा दी जाती थी। इन दोनों नियमों को प्रत्येक व्यक्ति को मानना पड़ता था।

(3) 39 धर्म नियम → एडवर्ड छठा ने 42 धर्म नियम बनाये थे जिसमें से कुछ नियम कैथोलिकों को पसन्द नहीं थे। इसलिए रानी ने संसद से 39 नियम पास करवा कर वे सभी प्रथाएँ पुनः प्रचलित कर दी, जो एडवर्ड के समय भी प्रचलित थी।

(4) उत्तराधिकार का नियम → हेनरी आठवाँ ने वसीयत के द्वारा ही एलिजाबेथ रानी बनी थी लेकिन कुछ लोग इसका विरोध कर रहे थे। किन्तु इस नियम के द्वारा वह उचित

T.D.C. Part - I, Paper - II (Hons)

अधिकारिणी बन गई ।

(5) कोर्ट ऑफ हाई कमीशन → रानी ने कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना की जिसमें धार्मिक झगड़ों का फैसला किया जाने लगा ।

एलिजाबेथ और धर्म सुधार प्रतिक्रिया आन्दोलन- रानी के शासन काल में सारे यूरोप में धर्म सुधार प्रतिक्रिया आन्दोलन बड़े जोर-शोर से चल रहा था। इस आन्दोलन का संचालक इग्नेशियस लायोला नामक एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति था। वह जेसुइट पादरियों को संगठित कर यूरोप से प्रोटेस्टेंट मत उखाड़ फेंकना चाहता था। रानी इससे भयभीत थी। मोवट के शब्दों में राजनीति तथा धर्म दोनों एक में ही गुथे हुए थे।" लेकिन रानी शासन-कार्य में बहुत दक्ष थी। वह इंगलैंड को इस प्रतिक्रिया आन्दोलन से एकदम अलग रखना चाहती थी। वह तो कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों से संधि कराना चाहती थी। झगड़े को रोकने के विचार से ही उसने "Court of High Commission" की स्थापना की थी। वह सबको धार्मिक स्वतंत्रता देना चाहती थी। इसके लिए उसने एंग्लिकन चर्च को भी स्थापित किया। रानी की नीति के विषय में Trevelyn का मत है कि -

Elizabeth's religious settlement tempered by successive doses of toleration has held a permanent place in the institutions and still more in her spirit of modern England.

एलिजाबेथ और कैथोलिक → रानी ने अपनी नीति और अपने सिद्धांत पर कुशलतापूर्वक अमल किया। सभी बिशप दृढ़दिल से उसकी सर्वोच्चता को मानते थे और जो नहीं मानते थे उनको जेल की हवा खानी पड़ती थी। किसी को उसने

तंग नहीं किया। इस तरह से बहुत से कैथोलिकों ने प्रोटेस्टैंट बनने के लिए शपथ लेकर भी पोप और कैथोलिक धर्म को नहीं छोड़ा।

एलिजाबेथ और प्रोटेस्टैंट — कैथोलिक को दबाने के बाद रानी का ध्यान प्रोटेस्टैंटों की ओर गया क्योंकि वे लोग रानी की उदार नीति से खुश नहीं थे। रानी के समय में इंगलैण्ड में प्रोटेस्टैंटों की संख्या काफी बढ़ रही थी। चर्च में उन्हीं लोगों का बोलबाला था। इसलिए एंग्लिकन चर्च के लिए ये लोग कैथोलिकों से भी खतरनाक हो सकते थे। वे लोग राजनीतिक में भी हस्तक्षेप करते थे और कहा करते थे कि धर्म में राज्य हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। वे लोग अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता की माँग कर रहे थे। इस तरह प्रोटेस्टैंट भयंकर रूप में विद्रोह कर रहे थे। रानी ने कई सुधार किया। अन्त में रानी को अपने सुधारों को स्थिर रखने के लिए कुछ कठोर होना पड़ा। लेकिन वह खून बहाने के पक्ष में नहीं थी। उसने दोनों सम्प्रदायों की रक्षा की। राष्ट्रीय धर्म को बढ़ावा देने के लिए प्रार्थना पुस्तक बनाई गई। रानी की धर्म-नीति के विषय में रैमजेम्यूर का कथन सत्य है कि- The Elizabethan settlement was not out-come of religious zeal. It was a compromise dictated by political necessity and for that reason satisfactory to enthusiastics on both side. But us worked, it has the great merit that it was reached by

इंगलैण्ड का इतिहास

...the consent of reasonable men, after a period of turmoil which had disturbed national unity.

पोप का विद्रोह → पोप ने रानी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। रानी ने उत्तर के 5,500 विद्रोहियों को पकड़वाकर, फाँसी दिलवाकर इस विद्रोह को कुचल दिया। इससे पोप नाराज हो गया। उसने 1570 ई० में रानी को धर्म से बहिष्कृत कर दिया तथा उसकी प्रजा को उसकी आज्ञा न मानने का आदेश दिया। अनेक षड्यंत्र पोप ने रानी को पदच्युत करने के लिए गुप्त रूप से जनता को भड़काने के इधर-उधर भेजे। पोप ने रानी के विरुद्ध आयरलैण्ड को भड़काया और इंगलैण्ड पर चढ़ाई कर रानी को मार देने के लिए आयरलैण्ड को कहा। अब रानी कैथोलिकों को कड़ी निगाह रखने लगी। कैथोलिकों के विरुद्ध कई कानून निकाले गए। कैथोलिक धर्म में दीक्षा देने वालों को मृत्युदंड और उनकी सम्पत्ति जब्त होने लगी। कैथोलिक पादरियों को इंगलैण्ड छोड़ने की आज्ञा निकाली गई। अतः रानी ने 20 वर्ष के शासन में 250 कैथोलिकों को फाँसी दी। अतः हम कह सकते हैं कि सभी कैथोलिक भयभीत थे और रानी के विरुद्ध काम करने की हिम्मत नहीं करते थे।

Dr. Digambar Jha
Dept. of History
S.R.A.P. College
Bara Chakiya (E. Champaran)